**Indian J. Soc.& Pol. 04(02):2017:149-152** **ISSN 2348-0084(P)**
**ISSN 2455-2127(O)**

# मुहम्मद गौरी का भारत अभियान – एक अध्ययन

**देवाराम**[1]
[1]व्याख्याता इतिहास,राजकीय बाँगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पाली, राजस्थान, भारत

**ABSTRACT**

***मुहम्मद गौरी एक मुस्लिम आक्रमण कारी शासक था, जिसका उद्देश्य भारत पर अपने साम्राज्य की स्थापना करना था। वह मुलतः गौर क्षेत्र का रहने वाला था जो भारत के पश्चिमी भाग का क्षेत्र माना गया है। भारत में इस्लाम के प्रचार का उद्देश्य लेकर मुहम्मद गौरी ने भारत पर कुछ महत्वपूर्ण सैनिक अभियान किए। इन अभियानों की शुरूआत उसनें पश्चिम में हिमालय के अन्तर्गत स्थित गौमल और खेमल दामक दर्रा से किया। उसका उद्देश्य सम्पूर्ण भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना एवं इस्लाम का प्रचार था। वह एक कुटनीतिज्ञ एवं योग्य सुल्तान था। उसने भारत में नियमित रूप से महत्वपूर्ण सैन्य अभियान किये जिसमें उसे लगभग सफलता प्राप्त हुई। उसके महत्वपूर्ण सैनिक अभियानों में मुल्तान, उच्छ, नाडोल एवं लौदरवा जैसलमेर, गुजरात का सैन्य अभियान तथा आबूरोड़ पर आक्रमण है।***

***KEY WORDS: मु0 गोरी, खैबर दर्रा, भारत विजय, सूफी***

मुहम्मद गौरी ने भारत के विजय का अभियान गोमल दर्रे से किया। महमूद गजनवी की तरह खेबर दर्र से नहीं किया। इसका कारण था कि गोमल दर्रा ज्यादा सुरक्षित व आसान था।(मिश्रा,पृ0126) उन दिनों गजनी से भारत आने का सरल मार्ग मुल्तान होकर ही था। अतः मुहम्मद गौरी ने गोमल दर्रे का उपयोग किया।

## मुल्तान अभियान

मुहम्मद गौरी बड़ा सूझबूझ वाला, चालाक एवं योजनानुसार कार्य करने वाला व्यक्ति था। चूँकि वह सूफी संप्रदाय का अनुयायी था, अतः अपनी सेना जिसमें अधिकांश सुन्नी मुसलमान थे, का विश्वास जीतने के लिए सर्वप्रथम मुल्तान के करमाती मुस्लिम शासक पर 1175 ई. में आक्रमण करके उस पर आसानी से अधिकार कर लिया। अधिकार करने के पश्चात् वहाँ अपने विश्वस्त व्यक्ति को प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त किया।

## उचअभियान

उच सिन्ध प्रदेश का ही एक राज्य था। यहाँ भाटी राजपूतों का राज्य था। यह वर्तमान जैसलमेर की सीमा से भी लगा हुआ था। अतः मुल्तान से सिन्ध विजय करने के लिए उच को जीतना आवश्यक था। यहाँ का शासक भट्टी राय बड़ा शक्तिशाली शासक था। उसके किले को घेर लिया गया, परन्तु सफलता नहीं मिल रही थी। राजपुत सेना बड़ा कड़ा मुकाबला कर रही थी। मुहम्मद गौरी को आश्चर्य हुआ कि एक छोटे से भारतीय राज्य को पराजित करना कितना कठिन हो रहा है। उसे अपने गुप्त चरों से जानकारी हुई कि राजा और रानी में बहुत मतभेद है। रानी सुन्दर भी है और महत्वाकांक्षी भी तथा उसकी जवान कुँवरानी भी बहुत सुन्दर है। अतः गौरी ने चतुराई से रानी के पास समाचार भिजवाया कि यदि वह किले के फाटक खुलवा दे तो वह उससे विवाह कर लेगा। इस पर रानी ने उत्तर भेजा कि वह तो अब विवाह की अवस्था में नहीं है, परन्तु यदि सुल्तान उसकी पुत्री से विवाह के लिए तैयार हो तथा पूरी सम्पत्ति पर उसका अधिकार रहने दे तो वह किले का समर्पण करवाने के लिए तैयार है। सुल्तान के स्वीकृति देने पर रानी ने कुछ दिनों में अपने पति को विष देकर मरवा दिया तथा शत्रु के लिए किले के द्वार खोल दिये। गौरी की सेना ने किले पर अधिकार कर लिया। गौरी ने अपने वचन का पूरा पालन नहीं किया और रानी को कैद कर गजनी भेज दिया तथा उसकी लड़की से विवाह कर लिया। गजनी में रानी तड़प–तड़प कर मर गई और उसकी पुत्री भी दुःख सहन नही करने पर एकाध साल में मर गई।(हेग,पृ038.39) परन्तु डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव का कहना है कि वर्तमान अनुसंधानों ने इस कहानी को गलत सिद्ध कर दिया है।(श्रीवास्तव,पृ073 )

## नाडोल एवं लोद्रवा (जैसलमेर) में गौरी का प्रतिरोध

1178 ई. में मुल्तान व उच विजय करने के बाद पश्चिमी राजपूताने के रास्ते मुहम्मद गौरी नहरवाल पर आक्रमण के उद्देश्य से आगे बढ़ा। मार्ग में लोद्रवा (जैसलमेर) के शक्तिशाली राज्य ने गौरी का प्रतिरोध किया। उस समय लोद्रवा पर भाटी महारावल भोजराज का शासन था।

नैणसी के अनुसार मुहम्मद गौरी गुजरात पर आक्रमण के लिए चला। महारावल ने इसकी सूचना गुजरात के सोलंकियों (चालुक्यों) को भिजवा दी। भोज की माता ने स्मरण करवाया कि विजयराज (भोज का पिता) के विवाह के समय उसकी सास ने

*1:Corresponding Author*

जब उसे दही का तिलक लगाया था तब कहा था कि बेटा ''उतर दिशा भड़ किंवाड़ होना'' तथा उसने इसकी स्वीकृति भी दी थी। अतः भोज को अपने पिता के वचनों अथवा उसकी उपाधि का निर्वाह करते हुए इस्लामी सेना को रोकने के लिए अग्रसर होना चाहिए। लांजा विजैराज का एक विवाह आबू के पंवारों के यहाँ हुआ था। धन्य है ऐसी माताएँ जो अपने पुत्रों को अपना कर्तव्य स्मरण करवाती है तथा प्राणोत्सर्ग की परवाह नहीं करती। भोज ने सेना गठित कर इस्लामी सेना का मुकाबला किया। इस मुकाबले में वह वीरगति को प्राप्त हुआ। उधर मुहम्मद गौरी का सेनाध्यक्ष मजूज खाँ भी काम आया। इस्लामी सेना ने लोद्रवे में लूट मचायी थी, लेकिन रावल जैसल ने शीध्र ही लोद्रवे का शासन सूत्र ग्रहण कर इस्लाम सेना से लूट का सामान अपने अधिकार में कर लिया।(महंता,पृ0277.278) नैणसी के अनुसार स्मरण रहे, भोज प्रथम बार में ही गौरा से पराजित नहीं हुआ था बल्कि तीन चार बार पराजित करने के पश्चात ही वह पराजित हो पाया था।

वस्तुतः भाटी प्रारम्भ से ही सीमावर्ती इस्लाम आक्रमणों से संघर्षरत रहे थे। लेकिन विजयराज लांजा (द्वितीय) को इस दिशा से इस्लाम आक्रमण के अभाव में अपनी उपाधि का औचित्य सिद्व करने का कोई अवसर नहीं मिला। इस कसौटी पर परीक्षित होने का अवसर विजयराज के पुत्र भोजदेव को अवश्य मिला था। लोद्रवा के पश्चात् गौरी की सेनाओं ने किराडु (बाड़मेर) को ध्वस्त किया। मंदिरों को तोड़ा गया तथा शमशान बना दिया।

गुजरात की ओर सैन्य अभियान में गौरी का दूसरा संघर्ष नाडोल के चौहान शासक केल्हण से हुआ। इस संघर्ष में केल्हण की सेनाओं ने गौरी को पसीने छुड़वा दिये। कई दिनों के संघर्ष के बाद नाडोल का पतन हो गया, परन्तु केल्हण गौरी की विशाल सेना के समक्ष अधिक दिनों तक टिक पाना सम्भव न होने की दिशा में अपनी सेना सहित नाडोल से निकल कर शीघ्र ही गुजरात की सेना के साथ जा मिला, जिन्होंने आबू के पास गौरी से मुकाबला करने की व्यूहरचना बना रखी थी। केल्हण की अपेक्षा थी कि अजमेर से पृथ्वीराज चौहान की सेना उसकी सहायता के लिए आएगी, परन्तु उसे निराशा ही हाथ लगी। गुजरात की चालुक्य सेना ने योग्य स्थान देखकर आबू के काग्रान में मोर्चाबन्दी कर रखी थी। नाडोल का केल्हण चालुक्यों का सामन्त था इस समय। डॉ. पाठक ''पृथ्वीराज विजय'' के आधार पर लिखते हैं कि युद्ध के पूर्व चौलुक्यों ने कदाचित् चाहमानों सेसहायता मांगी थी किन्तु अपने मंत्री कदम्बवास का परामर्श विपरीत होने के कारण पृथ्वीराज ने न तो नाडोल के चाहमानों की कोई सहायता की और न चौलुक्यों की ही।

## चालुक्यों की चुनौती एवं गौरो की हार

नाडोल पर अधिकार करने के पश्चात् मुहम्मद गौरी आबू होकर अन्हिलवाड़ा की ओर बढ़ना चाहता था। परन्तु चालुक्य सेना ने आबू के पास गदरारहट्टा पर मोर्चा लगा रखा था। आबू–चन्द्रावती का परमार शासक चालुक्यों का सामन्त शासक था। 1178 ई. में अन्हिलवाड़ा का शासक चालुक्य मूलराज द्वितीय था। गुजराती लेखकों ने उसे बालमूलराज भी कहा है। मेरूतुंग के अनुसार उसकी रानी नाईकी, जो चन्देलराज परमर्दिदेव की पुत्री थी, ने गाडरारीघट्ट में मुहम्मद गौरी की विशाल सेना के साथ युद्ध किया। भीषण संघर्ष में रानी नाईकी देवी ने गौरी की सेना को बुरी तरह पराजित किया।(मेरूतुंग,पृ097) गौरी की यह पराजय इतनी भयंकर थी कि गौरी भागकर सीधा गजनी पहुँचा। विदेशी इतिहासकार फोबर्स, बूलर, जैक्सन तथा हबीबुल्लाह आदि इतिहासकारों का मत है कि यह मुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी था। किराडु शिलालेख इस आक्रमण की तिथि 1178 ई. देता है।

डॉ. सत्यप्रकाश का मत है कि 1178 ई. में गौरी को मूलराज ने ही पराजित किया था। भ्रम इसलिए है कि भीम द्वितीय भी इसी वर्ष राजगद्दी पर बैठा थ। अतः मुस्लिम लेखकों ने भ्रमवश मूलराज के स्थान पर विजय का श्रेय भीम द्वितीय को दिया। डॉ. पाठक सुंधा अभिलेख तथा तबकाते नासिरी ग्रंथ के आधार पर अपना मत प्रकट करते हुए लिखते हैं कि गौरी का आक्रमण 1178 ई. में मूलराज द्वितीय के समय ही हुआ। मूलराज ने अपने छोटे भई भीम द्वितीय को युद्ध का नेतृत्व सौंपा था जिसने गाडरारघट्ट अर्थात काशहद की घाटी में मुहम्मद गौरी को पराजित किया। इसपराजय ने गौरी को अपनी योजनाओं को बदल डालने के लिए विवश कर दिया। हबीबुल्लाह ने आक्रमण की चर्चा करते हुए लिखते है। ''हिजरी 574 अर्थात 1178 ई. में गोमल दर्रे से होते हुए मुइजुदीन मुहम्मद गौरी ने मुल्तान और ऊँछ पर अधिकार कर लिया और दक्षिणी राजपूताना होता हुआ गुजरात पर चढ़ गया।

तबकाते नासिरी के अनुसार नाहरवाला (अन्हिलवाड़ा) का राजा अवस्था में एकदम नया होते हुए भी अपनी विशाल सेनाओं और हाथियों की सहायता से विजयी हुआ और सुल्तान मुइजुदीन को बिना किसी उपलब्धि के वापस लौटना पड़ा।(तबकाते ई नसीरी पृ0451.452) अन्य मुस्लिम लेखक भी इसकी पुष्टि करते हुए लिखते है कि रेगिस्तानी मार्गों से गजनी लौटते हुए गौरी सेनाओं को घोर कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी।(निजामुद्दीन पृ036) लौटते हुए गौरी को लोद्रवा का जैसलमेर भी मुकाबला करना पड़ा होगा। जिसने वहाँ से मुस्लिमों को मार भगाकर लोद्रवा पर पुनः अधिकार कर लिया था। नाड़डुल के चाहमान शासक केल्हण और उसके भाई कीर्तिपाल (जालौर चौहान राज्य का संस्थापक) ने काशहद के इस युद्ध में बड़ी वीरता प्रदर्शित की तथा तुर्कों की सेना को पराजित किया। ऐसा साक्ष्य सुधा पहाड़ी अभिलेख से ज्ञात होता है।(सुधा पहाड़ी अभिलेख) यह अभिलेख स्पष्टतः इस विजय का श्रेय दोनों भाइयों को ही देता है। स्वाभाविक है, क्योंकि भीम बालक था तथा रानी युद्ध का नेतृत्व कर रही थी तथा दोनों

चौहान भाई उसके दायें–बाये हाथ थे। इन दोनों ने ही चालुक्यों के सामन्त रूप में युद्ध में भाग लिया था। ऐसा कहें कि दोनों भाइयों ने नाडोल की पराजय का बदला गौरी से लिया। इस पराजय से गौरी इतना आतंकित हुआ कि वह बीस वर्ष तक गुजरात की और आँख उठाकर भी नहीं देख सका। प्रो. हबीबुल्ला ने इसे मुहम्मद गौरी की सैनिक पराजय ही नहीं बताया वरन् उसकी योजनाओं की असफलता भी बताया है।

भीम द्वितीय के अभिलेखों में अपवादहीन तरीके से मूलराज को गर्जानकों का विजेता का विशेषण दिया है।(भीम द्वितीय चालुक्य के अभिलेख) भीम के काल का एक अभिलेख भी कहता है कि मूलराज के राज्य में एक नारी भी हरा सकती है हम्मीर को। मेरूतुंग के अनुसार, अपने पुत्र (भीम) को गोद में लेकर तुर्को के विरूद्ध रानी नानकी देवी ने चालुक्य सेना का नेतृत्व किया और उन्हें आबू पर्वत के निकट गदरारहट्टा में हराया। सुंधा पहाड़ी अभिलेख में गदराहट्टा को कसरहड़ा लिखा है। यह स्थान आबू पर्वत की तलहटी में ग्राम कायाग्रम में है।

## पंजाब व सिन्ध विजय

गौरी के आक्रमण के समय पंजाब से पेशावर तक के भूभाग पर गजनवी वंश के मल्लिक खुसरो का शासन था जिसकी राजधानी लाहौर थी। अन्हिलवाड़ा के चालुक्यों से बुरी तरह पराजित होने के कारण गौरी को अपनी योजना बदलनी पड़ी। अब वह पंजाब की ओर से भारत में घुसना चाहता था। यह क्षेत्र उसके अनुकूल भी था क्योंकि यहाँ मुस्लिम शासन था। परन्तु पंजाब को विजय करने में उसे पूरे पाँच वर्ष लगे। इसका कारण भी स्पष्ट है। उसने 1179 ई. में फरशावर (पेशावर) पर कब्जा कर लिया। वहाँ से दो वर्ष के निरन्तर संघर्ष के पश्चात् वह लाहौर पहुँच सका। लाहौर पर अधिकार करने में उसे पूरे पाँच साल लग गये और 1186 ई. में वह अधिकार कर सका। यह भी अपनी वीरता से नहीं बल्कि धोखाधड़ी करके गौरी ने अमीर खुसरों को कैद कर लिया। खुसरो के पराजित होने से गजनवी वंश का सम्पूर्ण रूप से उच्छेद हो गया। मुहम्मद गौरी ने लाहौर का कब्जा करने के लिए तीन बार आक्रमण किया।

मुहम्मद गौरी के आक्रमण के समय खुसरो मलिक ने अपनी सेना के साथ पूरी ताकत से मुकाबला किया। परिणामस्वरूप गौरी को सफलता की कोई सम्भावना दिखयी नहीं दी। ऐसी अवस्था में अपनी इज्जत बचाने के लिए खुसरो मलिक से संधि करनी पड़ी और स्यालकोट के दुर्ग को ससैन्य छोड़कर वह गजनी लौट गया। स्यालकोट पर खुसरो मलिक ने पुनः अधिकार कर लिया।

लाहौर में असफलता के बाद मुहम्मद गौरी ने सम्भवतया 1180–81 ई. में निचले सिन्ध पर आक्रमण किया। निचले सिन्ध की राजधानी देवल थी तथा यहाँ का शासक शिया मुसलमान शासक सुम्र था।(हरिशंकर,पृ032) परन्तु इस कथन पर विश्वास नहीं होता क्योंकि गजनवी के आक्रमण करने की हिम्मत नहीं कर पाया था। इतिहास इसकी जानकारी नहीं देता है कि सैन्धव शासन कब समाप्त हुआ और कब वहाँ मुस्लिम शासन की स्थापना हुई ? आन्तरिक विद्रोहियों के परिणामस्वरूप गौरी ने निचले सिन्ध पर अधिकार कर लिया। उसके बाद उसने शेष सिन्ध पर भी अधिकार कर लिया। यहाँ से उसे अथाह सम्पत्ति प्राप्त हुई। जिससे उसने बड़ी भारी सेना की भर्ती की।

सिंध विजय के पश्चात् गौरी ने पूरी तैयारी के साथ पुनः 1186 ई. में लाहौर पर आक्रमण किया। सियालकोट के किले पर अधिकार करने के पश्चात् आगे बढ़कर लाहौर पर आक्रमण किया, परन्तु लाहौर को विजय कर पाना कठिन हो रहा था। सैनिक विजय से असमर्थ होते देखकर उसने छल छद्म का प्रयोग किया। खुसरो मलिक से सन्धि करने के प्रयत्न में संधि की शर्ते तय करने के लिए गौरी ने खुसरों को अपने खेमें में आने का निमन्त्रण दिया तथा खुसरो के बाहर आते ही उसे धोखे से कैद कर लिया, जिसकी कल्पना खुसरो को नहीं थी। इस प्रकार लाहौर का पतन हो गया। लाहौर के पतन से पेशावर से लेकर सम्पूर्ण मुल्तान, सिन्ध एवं पंजाब तक के प्रदेश पर मुहम्मद गौरी का अधिकार हो गया। इसके बाद गौरी ने मुल्तान के अपने प्रतिनिध शासक अली–ए–करभख को पंजाब की शासन व्यवस्था का भार सौंप कर गजनी के लिए प्रस्थान किया।(ईश्वरीप्रसादपृ0124)

मुहम्मद गौरी की पंजाब विजय के पश्चात् अब उसकी सीमा सीधे पृथ्वीराज चौहान के साम्राज्य की पश्चिमी सीमाओं के जा लगी। मुहम्मद गौरी को पंजाब तक के क्षैत्र तक की विजय प्राप्त करने के लिए 1175 ई. से 1185 ई. तक दस वर्षों का समय लगा।

## सन्दर्भ


मिश्रा, डॉ. रामगोपाल *मुस्लिम आक्रान्ताओं का भारतीय प्रतिरोध,*

हेग, बुलजले *द केम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वो. 3,*

*रिश्ता–तरीख–इ–फरिश्ता.* (1966) अनु. ब्रिग्स कोलकाता,

*तबकात–ई–नसीरी* अनु. रेबर्टी,

श्रीवास्तव,डॉ. ए. एल. *दिल्ली सल्तनत,*
शर्मा,हरिशंकर *मध्यकालीन भारत,*
महंता नैणसी री ख्यात, भाग – 2,
जैसलमेर री ख्यात,
तवारीख जैसलमेर,
टॉड राजस्थान,
मेंरूतुंग *प्रबन्ध चिन्तामणि,*

निजामुद्धीन *तबकात–इ–अकबरी,* खण्ड–1

सुंधा पहाड़ी अभिलेख

भीम द्वितीय चालुक्य के अभिलेख

प्राकृत एण्ड संस्कृत इनस्क्रिप्शन्स, भावनगर पुरातत्व विभाग, खं. 5,

डॉ. ईश्वरीप्रसाद *मध्ययुग का इतिहास,*